गणेश पण्डाल

मेरा नाम चंदा तिवारी है. मेरी उमर २१ साल है, अभी शादी को दो ही साल हुए है, मै मां बन चुकी हू और मेरा ९ महीने का एक लड़का है. शादी के बाद मेरे बदन मे बहुत विकास हुआ है, एक दम सांचे मे ढल गया है. मेरा रंग गोरा, सुंदर चेहरा, पके आम से स्तन, केले के तने से जांघे, बेदाग बदन.बच्चा होने के बाद भी मेरा बदन काफी आकर्षक है और जब मै बाहर निकलती हूं तो अक्सर लोग मुझे वासना भी नजरो से देखते है. मोहल्ले के लड़के जो हुल्लड़ प्रवित्ति के हैं अक्सर जब मै बगल से गुजरती हूं तो गन्दे कमेन्टस पास करते है पर मै जानती हूं कि इन लड़को से उलझने से मुझे ही प्रोब्लम होगी. मेरे पति का नाम आशीष तिवारी है जो शहर से बाहर काम करते है. हमारे घर से उनके शहर की दूरी ६ घंटे की है, मै खुद भी एक सरकारी स्कूल मे जॉब करती हूं. यहां मै अपने सास ससुर के साथ रहती हूं. मेरे पति का मार्केट रैपुटेशन ठीक नही है, वो अक्सर लोगो के पैसे लेकर उन्हे घुमाते रहते है. इसलिए लोग उन्हे जल्दी पैसे देते नही हैं. मेरी ड्यूटी सुबह १० से ४ बजे तक रहती है. बाकि समय मै घर पर ही रहती हूं.

हमारे घर के ठीक सामने एक मंच बना हुआ है जिसे गणेश पण्डाल के नाम से जाना जाता है. गणेश चतुर्थी के समय यहां गणेश जी कि स्थापना होती है और ७ दिनो तक उत्सव होता है. इसी प्रकार इस साल भी गणेश उत्सव के पार आते ही मोहल्ले के लड़के चंदा मांगने आ गये. मेरे पति इन लोगो को अक्सर धुत्कार कर भगा देते है पर उस टाईम पर मै घर पर अकेली थी इसलिए उन लोगो को टालने के लिए बोल दी की बाद मे दूंगी. उस टाईम तो वो लोग चले गये पर डेली दोनो टाईम आकर तकादा करने लगे. मुझे लगता था कि वो लोगो को तो मुझे पास से देखने का अच्छा मौका मिल गया था क्योकि हमेशा दो तीन लोग आते और एक मुझसे बात करता और बाकि मेरे स्तनो को निहारते या गहराईयो को देखने की कोशिश करते.आखिर उन्होने मुझसे कह दिया, "भाभी अगर पैसे देने मे इतनी प्रॉब्लम हो रही है तो आप प्रसाद दे दिजिएगा." मैने धीरे से पुछा, "प्रसाद मे क्या देना होगा?" उसने कहा, "हम हर साल खीर बनाते है ५ लीटर दूध से डेली, आप ५ लीटर दूध दे दिजिएगा एक दिन बस." ये बात मुझे अच्छी लगी और उन लोगो को टालना था, मै जानती थी कि मै ५ लीटर दूध भी नही दे पाऊंगी फिर भी मैने हामी भर दी. उन लोगो का आना बंद हो गया और मैने चैन की सांस ली. १० दिन बाद गणेश उत्सव चालू हो गया और पहले ही दिन वो लोग आ धमके. मैने हिम्मत करके कह दिया कि मै ५ लीटर दूध नही दे पाऊंगी और बिना पैसो के कोई मदद दे सकती हूं तो बताओ. वो लोग कुछ नही बोले और वापस चले गये. गणेश उत्सव के दो दिन हो गये और मेरे सास ससुर को अपनी बेटी के यहां जाना पड़ा, असल मे मेरी नन्द का डिलिवरी का डेट था. उन्को १ हफ्ते के लिए जाना था. मेरे बेटे की तबीयत ठीक नही थी सो मैने न जाने का फैसला किया. सो शाम को मेरे सास ससुर चले गये.

मेरी अक्सर आदत है कि मै शाम को खाना खाने के बाद बाहर सास के साथ टहलती हूं. इस टाईम पर मै नाईटी पहने हुए रहती हूं. क्योंकि गणेश उत्सव चल रहा था इसलिए मै थोड़ा रूक गई कि भीड़ छट जाये तब निकलूंगी. भीड़ छटते छटते रात के १०:३० हो गये, पुरा मोहल्ला सुनसान हो गया तो मै बाहर निकली. मैने नाईटी पहना हुआ था पर अंदर ब्रा नही पहनी थी. वैसे भी टहलने के बाद मै सीधे जा कर सो जाती हूं. अपने बेटे को मैने दूध पिला कर सुला दिया था, वैसे भी एक बार सोने के बाद वो रात में उठता नही है. मैने बाहर का गेट टिका दिया और टहलने लगी. अभी १० ही मिनट हुए थे टहलते हुए कि ५ लड़के पण्डाल से निकल कर अचानक रोड पर मेरे सामने आकर खड़े हो गये. ५ लड़को को एक साथ देख कर मेरे तो पसीने छुट गये. एक ने कहा, "भाभी आपने चंदा नही दिया तो क्या हुआ, आपको पूजा

मे तो आना चाहिए था." मै बगले झांकने लगी कुछ कहते ही नही बन रहा था. दूसरे ने कहा, "कोई बात नही, आप अभी पुजा कर सकती हैं." मैने कहा, "अभी नही मै बाद मे कर लूंगी. अभी काफी समय हो गया है." उसने कहा, "पुजा का भी कोई समय होता है क्या? जब चाहो कर लो. अब मना मत किजीए, चलिए भी." मै अपनी किस्मत को कोसती पण्डाल की तरफ चल दी और पांचो मेरे पीछे पीछे आ गये. मैने अनमने ढ़ंग से पुजा की और वापस आने को हुई तभी एक ने मेरे लिए कुर्सी लगा दी और बैठने को कहा. मैने कहा कि मुझे जल्दी है तो उसने कहा कि प्रसाद के बारे मे बात करना है. मै चुपचाप बैठ गई. उसने कहा, "भाभी आपने ५ लीटर दूध देने का वायदा किया था." मैने कहा कि मै दूध और पैसे देने मे असमर्थ हूं. उसने कहा, "पैसे देने को कौन बोल रहा है, दूध की बात हो रही है." मैने कहा, "दूध भी तो आखिर खरीदना पड़ेगा." उसने कहा, "किसने कहा की खरीद कर ही दिया जाता है?"उसने आगे बहुत ही भद्दे अंदाज में कहा, "आपका तो एक बच्चा है न गोद में? तो आपके स्तनो मे तो दूध भरा होगा, आप वही दूध निचोड़ कर दे दिजीए, हम काम चला लेंगे." मेरा चेहरा लाल हो गया पर मै कुछ बोल नही पाई. आसपास लोग होते तो एक बार पलट कर कुछ कहती पर अकेले थी तो हिम्मत ही नही हो रही थी. उसने आगे कहा, "क्या सोच रही है आप? यही कि आपके स्तनो का दूध प्रसाद मे प्रयोग हो सकता है या नही. हो सकता है भाभी जी, वैसे भी आपका दूध तो और अधिक पौष्टिक होगा." मेरा अब भी हिम्मत नही हो रही थी कुछ बोलने की. उसने अपनी धुन मे आगे कहा, "तो भाभी चलिए दूध निकाल कर दे दिजीए हमें." मैने कुछ कहा नही पर सर झुका लिया. उसने आगे कहा, "लगता है भाभी आप शरमा रही हैं, नही जरूरी भी है. आपसे तो होगा नही, मै आपकी मदद करवाता हूं."

उसने इशारा किया तो एक लड़का आकर पीछे से मेरी कलाईयों को पकड़ लिया और एक लड़के ने मेरे नाईटी के सामने के बटन खोलने लगा. अचानक से इतना सब हुआ तो मै हड़बड़ा गई. मैने कहा, "नही नही रहने दो मै कल ही ५ लीटर दूध दे दूंगी." उसी लड़के ने आगे कहा, "आप काहे पैसे खर्च करेंगी, आप निश्चिंत होकर बैठिए, हम इसी मे काम चला लेंगे." अब तक वो मेरे नाईटी के बटन खोल चुका था और मेरे स्तन उनके सामने था. एक लड़का एक कटोरी भी लेकर आ गया. उसने मेरे निप्पल के नीचे कटोरा लगाया और मेरे स्तन को दबाने लगा. मेरे स्तन से दूध कटोरे मे गिरने लगा, डर और शर्म से मेरी आंखे बंद हो गई थी. वो लोग एक एक करके मेरे स्तन को निचोड़ रहे थे, लगभग १५ मिनट मे उन लोगो ने मेरे दोनो स्तनो को पूरा निचोड़ लिया. एक ने चिल्ला कर कहा, "भाभी लगभग १ लीटर है." दूसरे ने कहा, "अबे आधा लीटर को एक लीटर बोल रहा है." उसने कहा, "मार्केट मे भी तो आधा लीटर का दूध एक लीटर का मिलता है." सबने हामी भर दी पर एक ने कहा, "भाई लोग एक बहुत बड़ी प्राबलम है, दूध मे मलाई तो है ही नही." दूसरे ने कहा, "मलाई हमारे पास है, पर निकालना पड़ेगा. भाभी से सहयोग ले लेते है मलाई निकालवाने में." इतना कह कर वो लोग मेरे नाईटी के बाकि बटन भी खोलने लगे. मेरी आंखे बंद थी तो मुझे पता नही चला, पता तब चला जब उन लोगो ने मुझे उठाया और मेरी पैन्टी उतारने लगे. मैने झट आंखे खोली और पुछी, "ये क्या कर रहे हो?" एक ने अपने लण्ड की तरफ इशारा करके कहा, "भाभी, यहां से मलाई निकालनी है, आपकी मदद चाहिए इसके लिए." मैने झिड़कते हुए कहा, "छोड़ो मुझे वरना मै शोर मचा दूंगी." उसने एक तरफ इशारा किया तो मैने पलट कर देखा तो वहां एक लड़के को मोबाईल से रिकार्डिंग करते पाया. उसने कहा, "भाभी आप शौक से चिल्लाये, हम भी सब को बतायेंगे कि दूध तो आराम से दुहवा ली है और मलाई मे शोर मचा रही है." अब तो मुझे काटो तो खून नही, कुछ बोलते ही नही बन रहा था. सब तरफ से फंस गई थी.

मुझे क्न्फयूज देख कर उन लोगो ने मेरे बदन से नाईटी निकाल दी और मेरे पैरो के पास से मेरी पैन्टी भी निकाल ली. मुझे समझ नही आ रहा था कि क्या करूं. दो लोग पण्डाल के अंदर घुसे और वहां से दो गद्दे निकाल कर एक किनारे मे बिछा दिये. मै देख सब रही थी पर कुछ कर नही पा रही थी. इन लड़को का क्या था सब वैसे ही बदनाम थे पर अगर विडियो किसी को दिखा देते तो मै भी बदनाम हो जाती. एक लड़के ने मुझे खीचते हुए गद्दो पर धकेल दिया और मेरे कंधो को दबा कर मुझे गद्दे पर लिटा दिया. सब अपने अपने कपड़े उतारने लगे और अपने लण्ड पर कॉन्डम चढ़ाने लगे. एक मेरे पास आया और मेरी टांगे फैला कर मेरी टांगो के बीच बैठ गया. तभी दूसरे ने कहा, "अरे, पहले कुछ फोरप्ले हो जाये?" उसने कहा, "अरे हम यहां सेक्स नही कर रहे है, एक धार्मिक कार्य मे भाभी से सहयोग ले रहे है. तो सब अपनी अपनी मलाई निकालो बस." उसने सर हिलाया और पहले ने मेरी चुत पर अपना लण्ड लगाया और एक धक्के से उसे अंदर डाल दिया. सेक्स मेरे लिये नया नही था पर यहां तो मेरा ब्लातकार हो रहा था, ये अलग बात है कि मै शोर नही मचा रही थी पर था तो ये भी ब्लातकार ही. उसने धक्का लगाना शुरू किया और लगातार बिना रूके धक्के लगाता रहा जब तक उसके लण्ड ने पानी नही छोड़ दिया. उसके बाद वो उठा और उसने अपने लण्ड से कॉन्डम निकाल कर उसमे भरा सारा पानी दूध के कटोरे मे डाल दिया. उसके उठते ही दूसरे ने मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया और धक्के लगाने लगा. लगभग दो घण्टे तक वे लोग मेरे चुत का भुर्ता बनाते रहे और आखिर मे मुझे छोड़ कर उठ गये. सब अपने अपने कपड़े पहनने लगे तो मैने भी उठ कर अपने कपड़े पहन लिए. उन मे से एक ने कहा, "भाभी काफी देर हो गई है, किसी शरीफ घर की औरत को इतने रात तक घर से बाहर नही रहना चाहिए, कोई देखेगा तो क्या सोचेगे." मै बोझिल कदमो से चलती हुए घर की तरफ रवाना हुई. लगातार मेरे चुत का इस्तेमाल होने की वजह से मुझे चलने मे दिक्कत हो रही थी. मै घर पहुंची और बिस्तर पर लेटते ही सो गई.

अगले दिन काफी देर तक सोती रही, फिर उठी और नहा कर नाश्ता बनाई और नाश्ता करने जैसे ही बैठी किसी ने दरवाजा खटखटाया. मैने दरवाजा खोला तो पाया कि कल रात मे जो लड़के मेरे साथ थे उन मे से एक था. वो हाथ मे एक कटोरा लिये हुए था. मै तो उससे नजरे नही मिला पा रही थी सो उसने कहा, "भाभी आपके लिये प्रसाद लाया हूं." और जबरदस्ती अंदर घुस गया. वो सोफा पर बैठ गया और एक कटोरे में खीर लाया था वो मुझे बढ़ा दिया. मैने खीर ले लिया तो उसने कहा, "भाभी खा कर तो देखिए कि कैसा बना है." मैने अनमने ढ़ग से एक चमम्च लिया और खीर खाने लगी. खीर का स्वाद अच्छा था बस हलका नमकीन भी लग रहा था. जब मैने खीर पूरा खा लिया तो उसने मेरे हाथ से कटोरा ले लिया और मुझसे पुछा, "खीर कैसा लगा भाभी?" मैने कहा, "अच्छा था." उसने कहा, "अच्छा क्यो नही होगा, आप ही के दूध से बना था." इतना कह कर वो बाहर निकल गया. मुझे बड़ा अजीब लग रहा था कि मैने अभी अभी अपने ही दूध से बना हुआ खीर खाया था. मैने अपने बेटे को लिया और स्कूल चली आई. शाम को चार बजे वापस घर पहुंची और खाना खा कर सो गई. रात मे आठ बजे उठी तो कुछ खाने का मन नही कर रहा था सो चाय बना कर बिस्कुट खाई और टी वी देखने लगी. मैने अपने बेटे को दूध पिलाया और वो बड़े आराम से सो गया. मुझे टहलने जाने का मन तो था पर मै डर से बाहर नही निकल रही थी. ठीक पौने ग्यारह बजे किसी ने घण्टी बजाई. मैने सोचा इस टाईम पर कौन आया होगा यही सोचते सोचते मैने दरवाजा खोला.

दरवाजा खोलते ही मेरा दिल धक से किया, कल रात के लड़को मे से एक था. उसने कहा, "भाभी आप आज बाहर नही निकली?" मैने कहा, "आज मेरा घूमने जाने का मन नही था." उसने कहा, "कोई बात नही, आप फटाफट पण्डाल आ जाईये." मैने पुछा, "किस लिए?" उसने मेरे स्तनो को पकड़ कर कहा, "आप भूल गई कि आपको ५ लीटर दूध देना है. अभी तो १ लीटर ही हुआ है. आ जाईये आपके थनो से दूध दोहना है." मैने हिम्मत करके कहा, "मुझे नही आना." और उसका हाथ झटक दी, जैसे ही दरवाजा बंद कर रही थी उसने कहा, "कल शाम को पण्डाल आईयेगा, हम सारे मोहल्ले के लिए छोटा सा प्रोग्राम रखे है, कि दूध कैसे दोहना है और मलाई कैसे निकालते है. वैसे आपके हस्बैंड यहां नही है पर जब आयेगे उन्हे भी बहुत पसंद आयेगा." मेरे माथे से पसीना आ गया, हाथ पैर कांपने लगे. अपनी बदहवासी सम्भाल कर मैने कहा, "ठीक है मै आती हूं." उसने कहा, "अंदर कुछ मत पहनियेगा, बहुत दिक्कत होती है." मैने सर हिलाया तो वो चला गया. मै बेडरूम मे गई और मैने बदन से सारे कपड़े हटा दिये. फिर मैने एक नाईटी पहन कर दरवाजा बंद किया और पण्डाल की तरफ चल दी. रास्ते मे ये सोच रही थी कि कल जो कुछ हुआ वो तो इत्तेफाक था पर आज तो वो लोग मुझे एक निचले दर्जे की रंडी के तरह इस्तेमाल करेंगे.

पर फंस तो चुकी थी सो अनमने मन से पण्डाल पहुंची. वहां वही ५ लड़के कुर्सी लगा कर इस तरफ से बैठे थे कि दूर से देखे न जा सके. मै पहुंची तो देखी कि वो लोग एक तरफ गद्दे बिछा कर रखे थे और एक बड़ा सा टेबल पास में रखे थे. मुझे देख कर एक लड़के ने कहा, "भाभी नाईटी उतार कर कृपा करके घुटनो और हाथो के बल टेबल पर घोड़ी बन कर बैठ जाईये." मैने उसे एक मिनट तक देखा तो उसने कहा, "आप को संकोच हो रहा है तो मै मोहल्ले से दो चार लोगो को मदद के लिये बुलवा देता हूं." मैने अपनी नाईटी उतारी और उसने जैसे कहा था वैसे ही टेबल पर बैठ गई. दो लड़के तेल लेकर आ गये और मेरे स्तनो की मालिश करने लगे. मैने उनकी तरफ देखा तो एक ने कहा, "गाय का भी दूध दुहने से पहले उसके थन की मालिश की जाती है. इससे दूध जल्दी और ज्यादा आता है." मुझे ये लोग गाय से तुलना कर रहे थे. तभी मैने एक तरफ देखा तो पाया कि एक लड़का डिजिटल कैमरा से विडियो रिकार्डिंग कर रहा है. मैने लगभग मिमियाते हुए कहा, "प्लीज, तुम लोग जो बोल रहे हो मै कर रही हूं. तो फिर ये विडियो रिकार्डिंग क्यों कर रहे हो? प्लीज इसे बंद कर दो." एक ने कहा, "भाभी कल ही रिकार्डिंग ही आपका काम करने के लिए काफी है पर ये तो हम अपने पर्सनल कलेक्शन के लिए कर रहे है. अगर आप मना करेंगी तो हो सकता है हम मे से किसी को बात बुरी लग जाये और कल आपके सहयोग के चित्र मोहल्ले भर मे बंट जाये." अब तो मेरे बोलने की हिम्मत ही नही थी. तभी तीन लड़के और वहां आ धमके. मैने फिर मिमियाते हुए कहा, "ये लोग कौन है?" एक ने कहा, "भाभी! हम लोगो को दूध दोहने की आदत तो है नही सो हमने इन्हे बुला लिया है. ये लोग पेशे से ग्वाले है और अच्छे से आपके थन से दूध दुह लेंगे. इन्होने ही तो मालिश करने का सजेशन दिया था. और फिर जितने ज्यादा लोग रहेंगे उतनी ज्यादा मलाई निकलेगी." मैने फिर कहा, "मै तो मर ही जाऊंगी." उसने कहा, "अरे भाभी जितने लोगो को बर्दाशत कर सकती हो कर लेना, बाकियो की मलाई चूस कर निकाल देना." मै फिर चुप हो गई और उन तीनो मे से दो मेरे बाजू में आकर खड़े हो गये. दोनो ने दोनो तरफ से मेरा स्तन पकड़ा और एक एक कटोरे मे दूध दोहने लगे. सच मे उतना दर्द नही हो रहा था जैसे कल रात हुआ था. लगभग ३० मिनट मे उन्होने मेरे स्तन से दूध की आखरी बूंद तक निचोड़ दी. फिर एक ने कहा, "चलो

भाभी अब गद्दे पर लेट जाओ, दूध हो गया, अब मलाई भी निकाल लेते हैं." मै उठी और गद्दे पर जा कर लेट गई.

वो सारे लोग कपड़े उतार कर आ गये. एक ने मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसाया और धक्के लगाने लगा. लगातार धक्के लगाने के बाद उसने पानी छोड़ दिया और कल की ही तरह कटोरे मे पानी डाल दिया. एक एक करके अपने क्रम से लोग मेरी चुत का उपयोग करते गये और पानी निकालते रहे. मेरी चुत का भुर्ता बन रहा था पर चुसने के घिन से मै चुपचाप पड़ी रही. आखिर ढाई घण्टे बाद सब ने अपना अपना पानी निकाल कर मुझे छोड़ा. मै उठी तो एक ने कहा, "भाभी! कल बुलावा तो नही भेजना पड़ेगा न?" मैने धीरे से कहा, "मै आ जाऊंगी." उसने सर हिलाया और मै घर की तरफ चलने को हुई तो पता चला कि चलते नही बन रहा है. एक ने कहा, "अरे भाभी आप तो चल नही पा रही है. रूकिये आपको घर छुडवा देता हूं." इससे पहले मै कुछ बोलती तीन लोग मेरे साथ हो लिए. मै धीरे धीरे चलती हुई घर तक पहुंची और दरवाजा खोली. सारा मोहल्ला सुनसान था इस बत की गनीमत थी. मै अंदर घुस कर दरवाजा बंद करने ही वाली थी जब एक ने कहा, "भाभी! आप अकेले है शायाद घर पर. एक जवान औरत को इस तरह से घर मे अकेले नही रहना चाहिए. चलिए हम आपके साथ ही रूक जाते है." और बिना मेरी मर्जी जाने वो तीनो अंदर घुस कर दरवाजा बंद कर दिये. मै किनारे मे ही खड़ी थी तो एक ने कहा, "भाभी! हम आपके साथ रूकेंगे तो आपको बहुत से फायेदे है, डर नही लगेगा, सुरक्षित रहेंगे, और आपको भईया की याद भी नही आयेगी. चलिए फटाफट कपड़े उतार कर नहा लिजिए और बेडरूम मे चलिए. हम आज आपको भईया की कमी महसूस नही होने देंगे." मै समझ गई थी ये तीनो रात भर मुझे नोचेंगे. पर न चाहते हुए भी मुझे मना करते नही बना. उसने कहा, "अब जल्दी से कपड़े उतारिये." मैने नाईटी उतार कर सीधे बाथरूम मे घुस गई और वो तीनो मेरे बेडरूम मे.

मै नहा कर टावेल लपेट कर जब कमरे मे घुसी तो देखा की तीनो कपड़े उतार कर मेरे बिस्तर पर लेटे है. सब अपने अपने लण्ड को सहला रहे थे, मुझे आते देख कर एक ने कहा, "क्या भाभी! अब तो रात भर हम तीनो आपके पति की भूमिका निभायेंगे. हमसे क्या पर्दा, उतार दिजिए टावेल." मैने बिना कुछ बोले टावेल उतार दिया. उसने आगे कहा, "आप थक गई होंगी, आईये बिस्तर पर लेट जाईये." मै बिस्तर पर जा कर बैठ गई और एक ने मुझे खींच कर बिस्तर पर लिटा दिया. मै पीठ के बल लेट गई तो वो लोग मेरे बदन से खेलने लगे. जब खेलते खेलते तृप्त हो गये तो एक ने मेरे टांगो के बीच जगह बनाई और पुछा, "भाभी प्रेग्नेन्सी कंट्रोल करने के लिए आप कुछ लेती है या नही?" मैने धीरे से कहा, "लेती हूं." उसने आगे कहा, "तब ठीक है, हमे भी कॉन्डम के साथ मजा नही आता है. वैसे आपके पति बहुत लक्की है जो आप जैसा मख्खन मलाई से उनकी शादी हुई." दूसरे ने कहा, "मख्खन मलाई से शादी उसकी हुई है और मख्खन मलाई उतार हम रहे है." कोई कुछ नही बोला तो उसने लण्ड अंदर घुसा कर धक्का लगाना शुरू कर दिया. लगातार धक्के लगाने के बाद वो मेरे चुत में ही पानी छोड़ कर अलग हो गया. फिर उसकी जगह दूसरे ने ले ली. रात भर लगातार ये लोग मेरे चुत का भुर्ता बनाते रहे और मै बिना कुछ बोले इनके नीचे पड़ी रही. आखिर सब थक गये और मुझे बीच मे दबाये हुए सब सो गये.

सुबह किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी, तो एक उठा और बिना कपड़े पहने दरवाजे की तरफ चल दिया. मुझे तो डर लग रहा था कि अगर कोई जान पहचान वाला होगा तो क्या होगा. दो मिनट के बाद वो उसी लड़के के साथ वापस आया जिसने कल मुझे खीर खिलाया था. वो आज फिर खीर लेकर आया था, मेरे ही दूध की खीर. उसने हम सब को बिना कपड़ो के देखा तो बोला, "तुम सब यहां क्या कर रहे हो?"

एक ने कहा, "कल रात हो जब भाभी को छोड़ने आये तो भाभी बोली कि रात मे इनको डर लगता है इसलिए रूक जाओ." साफ झूठ बोल रहे थे वो लोग. उसने आगे कहा, "हम पहले तो नही तैयार हुए तो भाभी बोली कि कोई घर पर नही है और हम सब को रात भर अपने चुत की सेवा देंगी तो हम मन मार कर रूक गये." उसने कहा, "तो मुझे बुलाने मे दिक्कत थी क्या." दूसरे ने कहा, "अरे नाराज क्यों होता है, आज रात को तू रूक जाना. भाभी के फैमिली वाले तो कल दोपहर में आ रहे है." उसने सर हिलाया और सब ने कपड़े पहने, खीर की कटोरी साईड मे रख कर सब निकल गये. मैने मन ही मन सोचा की आज रात ये लोग फिर मेरी तिक्का बोटी करेंगे.

शाम तक मै सोती रही जब उठी तो बाहर शोर सुन कर बाहर निकली. देखा की सब गणेश विसर्जन को जा रहे है, मै फिर घर के अंदर आ गई. रात ने बाहर देखा दो पूरा मोहल्ला सुनसान था. नौ बज रहे थे तभी उन लड़को मे से एक मेरी तरफ आते दिखा. मेरे पास आकर उसने कहा, "चलिए भाभी!" मैने कहा, "आज तो विसर्जन हो गया फिर किस लिए." उसने कहा, "आप चलिए तो फिर बताते है." मै मन मार कर उसके साथ चल दी. वहां पहुंची तो उनके लीडर से पुछी, "आज तो विसर्जन हो गया फिर किस लिए बुलवाये हो." उसने कहा, "आप तो देख ही रही हैं कि हमने कितनी मेहनत की है. हमे भी तो मेहनताना मिलना चाहिए. चलिए जल्दी कपड़े उतारिये और हमें अपना मेहनताना लेने दिजिए." मैने कस कर दांत पीसे और कपड़े उतारने लगी. आज टेबल पर ही गद्दे बिछाये गये थे सो मैने उस पर लेट गई. सब ने जल्दी जल्दी कपड़े उतारे और एक मेरे टांगो के बीच आकर अपना कार्यक्रम चालू कर दिया. जब वो मेरी चुत मे धक्के लगा रहा था तभी मैने देखा कि एक अपने लण्ड पर क्रीम लगा रहा है.जो मेरी चुत मे धक्के लगा रहा था उसने पानी मेरी चुत मे ही छोड़ दिया और अलग हो गया. जिसे मैने लण्ड पर क्रीम लगाते देखा था वो पास आया और मुझे खींच कर उठाया और खड़ा कर दिया. उसके बाद उसने मुझे सामने की तरफ झुकाया और मेरे हाथो को टेबल पर रख दिया. मै पशोपेश मे थी जब उसने मेरे चुत की जगह मेरे गांड़ के छेद से अपना लण्ड टिकाया. जब तक मै उसकी इच्छा समझ पाती तब तक उसने एक झटका दिया और सारा लण्ड क्रीम मे सने होने की वजह से अंदर चला गया. मैने एक हल्की सी चीख मारी, चीखना तो जोर से चाहती थी पर इससे आस पास से लोगो का आकर्षण मिलता. एक ने कहा, "क्या भाभी, भईया भी कितने बड़े गांडू है, आज तक इस तरफ का उपयोग नही किये." ये लोग ब्लातकार जैसे स्थिति मे मेरी गांड़ का भुर्ता बना रहे थे और मुझे ये बता रहे थे कि मेरे पति ने ऐसा नही किया तो वो बेवकूफ है.

लेकिन मै कुछ बोलने या बहस करने कि स्थिति मे नही थी. अभी की स्थिति मे इन लोगो के नजर में मै तो एक रंडी थी, जिससे ये लोग अपना दिया हुआ मूल्य या पैसे का, मेरा जिस्म नोच कर वसूल करने की प्राथमिकता थी. ये अलग बात थी कि मुझे कोई पैसा नही मिलने वाले थे और ये लोग मुझे बहुत मेहनत और हजारो प्रकार के तोड़ जोड़ करके इस स्थिति मे फंसाये थे. ये लोग उसी का हर्जाना वसूल रहे थे. मै इन सब की बात इसलिए मान रही थी कि आज अपनी मन की करनी के बाद शायद ये लोग मुझे बख्श दे और भविष्य मे मुझे परेशान न करें. पर ये भी तय नही था हो सकता है कि आज ये मुझे एक रंडी की भांति इस्तेमाल करे और भविष्य मे मुझे एक रखेल के रूप मे उपयोग करें. आज भी इनके पास जो सबूत है उसी के डर से मै इन लोगो के पास

एक रंडी की तरफ इस्तेमाल होने आई हूं, क्या पता कल भी ये लोग मुझे उसी सबूतो के दम पर ब्लैकमेल करे और जब भी मौका मिले मेरे जिस्म को नोचें.

वो लड़का ताबड़तोड़ धक्के लगाने लगा, उसके हर एक धक्के से मेरी हल्की चीख निकल रही थी पर शायद बाकि लोगो को इसमे भी मजा आ रहा था. वो लगातार धक्के लगाते लगाते पानी छोड़ दिया और अलग हट गया. उसके हटते ही एक ने मुझे टेबल से निचे उतारा और खुद एक कुर्सी पर बैठ गया. उसने मुझे अपने सामने घुटनो के बल बैठाया और मुझे इशारे से अपना लण्ड चूसने को कहने लगा. मैने ये भी आज तक नही किया था सो मैने बहुत ही मरी सी आवाज मे कहा, "मैने आज तक नही किया है, मुझसे नही होगा." वो मुझे देख कर मुस्कुराया और खींच कर एक झापड़ मेरे गाल पर दे दिया. उसने कहा, "साली रंडी, नौटंकी करती है, नही की है तो कर, चूस साली नही तो मार मार कर खाल उतार दूंगा." एक ने टोका, "क्या यार, मारने की क्या जरूरत है, भाभी इतना सहयोग कर रही है, चूसेगी यार, चलो भाभी चूसना शुरू करो." मैने उनके तेवर देखे तो घिघि बंध गई और मैने उसका लण्ड अपने मुंह मे लेकर चूसना शुरू किया. उसका लण्ड बमुश्किल से अंदर जा रहा था और स्वाद भी अजीब सा था. मै जैसे तैसे उसका लण्ड चूसती रही और अचानक उसने मेरे मुंह मे ही पानी छोड़ दिया. मैने सब थूक दिया और वो अलग हट गया.

उसके बाद तो सब एक एक करके मेरे जिस्म को नोचने लगे, जिसे जो पसंद आता वैसा करता. कोई मेरी चुत का भुर्ता बनाता, कोई मेरी गांड़ का, जिसे अच्छा लगता वो मुझसे अपना लण्ड चुसवाता. मै सब का सहयोग करती रही जब तक सब संतुष्ट नही हो गये. उसके बाद ८ मे से ६ लोग कपड़े पहन कर अपने अपने घर चले गये. सिर्फ दो लोग रूके रहे. मै एक कोने मे कुर्सी पर बैठ गई. वो लोग आपस मे बात करने लगे. पहली बार दोनो ने एक दूसरे का नाम लिया. एक का नाम रघु था और एक का विशू. रघू ने कहा, "यार कोई सोच भी नही सकता कि कोई इस तरह के पण्डाल मे मौज मस्ती भी कर सकता है." विशू बोला, "यार कोई ये भी तो नही सोच सकता कि इस जैसी घरेलू औरत इतने लोगो को एक साथ सह ले और फिर भी अपनी टांगो पर खड़े रह सके." रघु बोला, "सही बोल रहा है, आप तौर पर तो इतने लोगो के साथ सोने के बाद किसी भी औरत की गांड़ फट जायेगी पर मानना पड़ेगा भाभी को." विशू बोला, "तो क्यो रोक कर रखा है इनको, जाने दे अब." उसने कहा, "अरे एक एक डबलरोटी वाला राऊंड मार लेते है, बहुत दिन हो गये है. वैसे भी कल इनके फैमली वाले आ रहे है. फिर पता नही कभी मौका मिले भी या नही." विशू बोला, "ठीक बोल रहा है तू." दोनो मेरे पास आये और मुझे खींच कर उठाये. उन्होने मुझे कुर्सी से दूर खड़ा करके मेरी टांगे फैलाई और दोनो मेरे आगे पीछे खड़े हो गये. दोनो क्या करना चाहते है इस बात की मेरी उत्सुकता थी पर जैसे ही समझ आया पसीने छुट गये. दोनो ने आगे पीछे से मेरी चुत और गांड मे एक साथ अपना लण्ड घुसा दिया. अब मुझे समझ आया कि डबलरोटी क्यो बोल रहे थे. ये दोनो डबलरोटी और मै बीच की मक्खन. दोनो एक साथ धक्के लगाने लगे. और लगातार धक्के लगाते हुए एक साथ पानी छोड़ दिये. दोनो ने अपने जगह बदले और फिर से धक्के चालू किये और जल्द ही पानी छोड़ कर अलग हो गये. मै वही कुर्सी पर बैठ कर आराम करने लगी और वो लोग भी कुर्सी पर बैठ गये. १५ मिनट बाद मैने रघु से पुछा, "अब मै जाऊं?" रघु ने कहा, "चली जाना भाभी पर जाने से पहले एक एक बार हमारा लण्ड चुस तो लो." मैने अनमने मन से उनके सामने बैठ गई और एक एक करके दोनो का लण्ड चूस कर पानी निकाल दी. मैने फिर पुछा, "अब मैं जाऊं?" विशू ने कहा, "अरे भाभी! चली जाना, पर जाने से पहले अपना थन तो खाली कर दो." ये कह

कर दोनो ने एक एक ग्लास मेरे ओर बढ़ा दिया. मैने अपने दोनो स्तनो से जितना हो सकता था उतना दूध ग्लास मे निचोड़ कर दोनो को दे दिया. फिर मैने कपड़े पहने और घर की ओर निकल गई. दोनो ने मेरे दूध से भरे ग्लास को शराब के ग्लास के तरह आपस मे टकराया और उसमे का दूध पीने लगे. मै घर पहूंच कर सबसे पहले नहाई और फिर सो गई.

अगले दिन मेरे सास ससुर वापस आ गये और सब बंद हो गया. पर जैसा कि मै अपेक्षा करती थी सब हमेशा के लिए बंद नही हुआ. जब भी मै कभी किसी सुनसान एरिया से गुजरती तो एक या दो लड़के मेरा रास्ता रोक लेते और मुझे लेकर झाड़ियो मे घुस जाते. जल्दी जल्दी मेरे बदन से अपनी प्यास बुझाते और निकल जाते. कभी घर मे अकेली होती तो कोई न कोई पहुंच कर उस मौके का फायदा उठा लेता. अभी तक तो किसी को पता नही है पर कभी किसी को भनक लग गई उस दिन के ख्याल से भी झुरझुरी हो जाती है. पर न तो उन लोगो को रोकने मे समर्थ हूं न ही स्थिति सम्भालने में.